गांधार और मथुरा कला के विभिन्न चरणों में महिलाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन

सरोज मीणा, डॉ. सुनीता सिन्हा
इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

A COMPARATIVE STUDY OF WOMEN IN DIFFERENT PHASES OF GANDHARA AND MATHURA ART

Saroj Meena, Dr. Sunita Sinha
Department of History, Bhagwant University, Ajmer, Rajasthan, India

सारांश:
भारतीय उपमहाद्वीप की कला परंपराएँ सदियों से सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक चेतना की वाहक रही हैं। गांधार और मथुरा कला की शैलियाँ प्राचीन भारत की दो प्रमुख मूर्तिकला परंपराएँ हैं, जो विशेष रूप से बुद्ध, बोधिसत्व और अन्य धार्मिक प्रतीकों के साथ-साथ तत्कालीन समाज और संस्कृति की झलक भी प्रस्तुत करती हैं। इस शोध पत्र में गांधार और मथुरा कला के विभिन्न कालखंडों में महिलाओं के चित्रण, उनकी सामाजिक भूमिका, सौंदर्यबोध, वस्त्र-विन्यास और प्रतीकात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जहां गांधार कला यूनानी-रोमन प्रभाव से प्रेरित होकर महिलाओं को यथार्थवादी और सौम्य रूप में दर्शाती है, वहीं मथुरा कला भारतीय परंपरा और प्रतीकों के अनुसार अधिक आध्यात्मिक, सांकेतिक और आदर्शवादी स्वरूप को प्रस्तुत करती है। इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि दोनों कलात्मक परंपराओं में स्त्री का स्थान केवल सौंदर्य या श्रृंगार तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सांस्कृतिक और धार्मिक विमर्श की केंद्रीय धारा में भी थी।

मुख्य शब्द: गांधार कला, मथुरा कला, मूर्तिकला, महिला चित्रण, बौद्ध कला, सौंदर्यबोध, भारतीय कला इतिहास, प्रतीकात्मकता, स्त्री अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन।

परिचय

गांधार और मथुरा कला भारत की प्राचीन मूर्तिकला परंपराओं की दो महत्वपूर्ण शाखाएँ हैं, जो न केवल धार्मिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से अपनी पहचान बनाती हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के विविध पक्षों को भी मूर्त रूप प्रदान करती हैं। इन दोनों कलात्मक धाराओं ने विभिन्न ऐतिहासिक कालों में स्त्री को अलग-अलग दृष्टिकोणों से चित्रित किया है, जो न केवल उस युग के सौंदर्यबोध को दर्शाते हैं, बल्कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति, धार्मिक भूमिका और सांस्कृतिक प्रतीकों की भी व्याख्या करते हैं। गांधार कला, जो मुख्यतः उत्तर-पश्चिमी भारत और आधुनिक पाकिस्तान के क्षेत्रों में विकसित हुई, यूनानी-रोमन प्रभाव से समृद्ध रही, वहीं मथुरा कला, गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र में फली-फूली, पूर्णतः भारतीय शैली और परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है।

इन दोनों कलात्मक परंपराओं में महिलाओं के चित्रण की शैली, प्रतीकात्मकता, वस्त्रों और मुद्राओं में उल्लेखनीय अंतर पाया जाता है। एक ओर जहां गांधार कला की स्त्रियाँ अधिक यथार्थवादी, कोमल और शारीरिक सौंदर्य की दृष्टि से उकेरी गई हैं, वहीं मथुरा कला में वे आध्यात्मिक शक्ति, मातृत्व और भक्ति का प्रतीक बनकर उभरती हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य दोनों कलात्मक परंपराओं में स्त्री की प्रस्तुति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है, जिससे यह समझा जा सके कि विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में स्त्रियों की छवि और महत्व किस प्रकार से निर्मित हुए।

यह परिचय शोध के लिए एक वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है, जिसमें कला और समाज के अंतर्संबंधों को समझने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन न केवल मूर्तिकला की शैलीगत भिन्नताओं को स्पष्ट करता है, बल्कि स्त्री विषयक दृष्टिकोणों के ऐतिहासिक विकास को भी उजागर करता है, जो भारतीय कलाओं की समृद्ध परंपरा का महत्वपूर्ण आयाम है।

उद्देश्यः

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य गांधार और मथुरा कला की विकास यात्रा में महिलाओं के चित्रण और उनके प्रतीकात्मक अर्थों की तुलनात्मक विवेचना करना है। यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करता है कि विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में महिलाओं को किस रूप में प्रस्तुत किया गया तथा उन चित्रणों का क्या वैचारिक या सांस्कृतिक महत्व रहा। साथ ही, यह भी विश्लेषण किया गया है कि इन कलात्मक परंपराओं में महिलाओं के रूप, वस्त्र, मुद्राएँ और भाव-भंगिमाएँ किस तरह उस काल की सामाजिक संरचना और नारी की स्थिति को प्रतिबिंबित करती हैं।

गांधार और मथुरा कला की विकास यात्रा में महिलाओं के चित्रण और उनके प्रतीकात्मक अर्थों की तुलनात्मक विवेचना

गांधार और मथुरा कला की विकास यात्रा भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक इतिहास की दो महत्वपूर्ण धाराएँ हैं, जिन्होंने न केवल धार्मिक भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया, बल्कि सामाजिक संरचनाओं और लैंगिक दृष्टिकोणों को भी आकार दिया। इन दोनों कलात्मक परंपराओं में महिलाओं का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि इनके माध्यम से तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनकी भूमिकाएँ और उनसे जुड़ी सांस्कृतिक धारणाएँ स्पष्ट होती हैं। गांधार कला, जो प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर तीसरी शताब्दी ईस्वी तक उत्तर-पश्चिमी भारत और वर्तमान पाकिस्तान-अफगानिस्तान क्षेत्र में विकसित हुई, अपने यथार्थवादी शिल्प, ग्रीको-रोमन प्रभावों और भाव-प्रधान मूर्तियों के लिए जानी जाती है। इस परंपरा में महिलाओं को कोमल, भावपूर्ण और सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक रूप में दर्शाया गया, जिनमें उनकी वेशभूषा, गहनों, केशविन्यास और देहभंगिमा में गहन यथार्थवाद और नारीत्व की कोमलता परिलक्षित होती है।

इसके विपरीत मथुरा कला, जो शुद्ध भारतीय शैली में विकसित हुई और जिसकी जड़ें शुंग, कुषाण एवं गुप्त काल तक फैली हुई हैं, स्त्रियों के चित्रण में अधिक आध्यात्मिक, प्रतीकात्मक और आदर्शवादी दृष्टिकोण अपनाती है। मथुरा की महिला मूर्तियाँ न केवल यक्षिणी, नागकन्या या देवी के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं, बल्कि वे मातृत्व, प्रजनन शक्ति और शुभता की प्रतीक के रूप में भी देखी जाती हैं। उनकी मुद्राएँ, स्थिर मुद्रा में स्थित भाव, और कम से कम वस्त्रों में भी सांस्कृतिक गरिमा का भाव उत्पन्न करने की शैली, मथुरा कला की विशिष्टता को दर्शाती है। यहां स्त्री सौंदर्य केवल दृष्टिगत आकर्षण नहीं, बल्कि एक धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य का प्रतीक होता है।

गांधार में स्त्री की उपस्थिति अधिक सांसारिक, जीवन के लौकिक पहलुओं से जुड़ी हुई प्रतीत होती है, जबकि मथुरा में उसका रूप देवीत्व के निकट होता है, जो समाज में उसकी ऊँची स्थिति को रेखांकित करता है। गांधार की स्त्रियाँ भले ही भावनाओं और यथार्थ के निकट दिखें, लेकिन मथुरा की स्त्रियाँ आस्था और परंपरा की मूर्त प्रतीक हैं। इस तुलना से यह स्पष्ट होता है कि दोनों परंपराओं में महिला चित्रण केवल सौंदर्याभिव्यक्ति नहीं, बल्कि गहन सांस्कृतिक संदेश का वाहक भी था, जिसने भारतीय कला में स्त्री के महत्व को बहुआयामी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। गांधार और मथुरा कला में स्त्री के चित्रण की यह विविधता न केवल उस युग की सांस्कृतिक विशेषताओं को रेखांकित करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि भारतीय कला में स्त्री की भूमिका एक जीवंत, गतिशील और प्रतीकात्मक शक्ति के रूप में निरंतर विकसित होती रही।

विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में महिलाओं को किस रूप में प्रस्तुत किया गया तथा उन चित्रणों का वैचारिक या सांस्कृतिक महत्व

गांधार और मथुरा कला में महिलाओं का चित्रण उन सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रतिबिंब है, जिनमें ये कलात्मक परंपराएँ विकसित हुईं। विभिन्न ऐतिहासिक युगों में समाज की संरचना, धार्मिक विश्वासों की प्रकृति और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों में जो परिवर्तन आए, वे सीधे रूप से कला के माध्यम से स्त्री के स्वरूप में दिखाई देते हैं। गांधार कला, जो मुख्यतः बौद्ध धर्म से प्रेरित थी और यूनानी-रोमन प्रभावों के कारण यथार्थवादी शैली में ढली, उसमें महिलाओं को प्रायः सहायक पात्रों, रक्षक देवियों या सौंदर्य के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया। उनके मुखमंडल में कोमलता, वेशभूषा में

भव्यता और शरीर की मुद्राओं में लचीलापन उस समय की जीवनदृष्टि को प्रकट करता है, जहाँ नारी को आकर्षण और सहचरी के रूप में देखा जाता था। धार्मिक दृष्टि से, वे बुद्ध की कहानियों में कभी रानी, कभी साधिका और कभी बोधिसत्व की उपासिका के रूप में आती हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिला चित्रण न केवल सांसारिक जीवन से जुड़ा था, बल्कि अध्यात्म की ओर भी संकेत करता था।
मथुरा कला में महिलाएं अधिक आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक स्वरूप में उभरती हैं। यहाँ उन्हें यक्षिणी, मातृका, देवी या शक्ति के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस परंपरा में महिला का चित्रण केवल रूप-सौंदर्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह धर्म, उपासना और सृजन की शक्ति का मूर्त स्वरूप बनकर सामने आई। मथुरा की मूर्तियों में नारी का उभार मातृत्व और प्रजननशक्ति का द्योतक है, जो उसे लोककल्याण की एक महत्वपूर्ण वाहक बनाता है। इन चित्रणों में स्त्री को शुभता, समृद्धि और आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रतीक रूप में स्थापित किया गया, जो समाज की धार्मिक चेतना में उसकी केंद्रीय भूमिका को दर्शाता है।
इन कलात्मक परंपराओं में स्त्री का चित्रण एक ओर सामाजिक दृष्टिकोणों को उजागर करता है, जहाँ नारी की भूमिका एक सजावटी या सहचर तत्व से आगे बढ़कर धार्मिक संरचना का हिस्सा बनती है, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक विमर्शों को भी आकार देता है। स्त्री की भंगिमाएँ, मुद्राएँ, वस्त्र और आभूषण उस समय की सौंदर्य दृष्टि, नैतिक मान्यताओं और धार्मिक धारणाओं का एक समन्वित रूप होती थीं। इसलिए इन चित्रणों का वैचारिक महत्व इस बात में है कि उन्होंने स्त्री को केवल कला का विषय नहीं बनाया, बल्कि उसे एक सांस्कृतिक मूल्य और धार्मिक चेतना के रूप में प्रतिष्ठित किया। मथुरा और गांधार की मूर्तिकला में महिलाओं की उपस्थिति, उस युग की नारी-दृष्टि, उसकी भूमिका और उसके सम्मान की गहराई को प्रकट करती है, जो आज भी भारतीय कला और संस्कृति में उसकी अमिट छवि के रूप में बनी हुई है।

कलात्मक परंपराओं में महिलाओं के रूप, वस्त्र, मुद्राएँ और भाव-भंगिमाएँ किस तरह उस काल की सामाजिक संरचना और नारी की स्थिति को प्रतिबिंबित करती हैं

गांधार और मथुरा जैसी प्राचीन भारतीय कलात्मक परंपराओं में महिलाओं के रूप, वस्त्र, मुद्राएँ और भाव-भंगिमाएँ उस काल की सामाजिक संरचना और स्त्री की स्थिति का गहन प्रतीक बनकर सामने आती हैं। इन मूर्तिकला परंपराओं में नारी न केवल एक सौंदर्यात्मक विषय रही, बल्कि वह तत्कालीन समाज की सोच, संस्कृति और धर्म का प्रतिबिंब भी बनी।
गांधार कला में महिलाओं के रूप में जिस यथार्थवाद और शारीरिक सौंदर्य का चित्रण मिलता है, वह ग्रीको-रोमन प्रभावों के कारण अधिक सांसारिक और भौतिक प्रतीकों से युक्त है। उनके वस्त्र महीन, शरीर से सटे हुए होते हैं, जो उनके अंगों की रचना और सौंदर्य को प्रमुखता से उभारते हैं। यह न केवल तत्कालीन समाज में नारी को एक आकर्षक और सौंदर्य के प्रतीक रूप में देखने की दृष्टि को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि महिलाओं की सामाजिक भूमिका भले ही प्रत्यक्ष सत्ता से दूर रही हो, परंतु वे कला, संस्कृति और जीवन के सौंदर्य पक्ष की केंद्रबिंदु थीं। उनकी भाव-भंगिमाओं में कोमलता, स्नेह और शांति झलकती है, जो उन्हें एक आदर्श नारी की छवि में प्रस्तुत करती है।
वहीं मथुरा कला में महिलाओं की मूर्तियाँ अधिक आत्मीय, शक्तिशाली और धार्मिक प्रतीकात्मकता से भरी होती हैं। वहाँ यक्षिणियों और मातृकाओं के रूप में प्रस्तुत स्त्रियाँ न केवल उर्वरता और समृद्धि की द्योतक होती हैं, बल्कि वे लोकविश्वास और धार्मिक परंपराओं का भी मूर्त रूप हैं। उनके वस्त्र अपेक्षाकृत सादे होते हैं, परंतु शरीर की गरिमा और सांस्कृतिक शुद्धता को व्यक्त करते हैं। उनका रूप यथार्थ से अधिक आदर्श की ओर उन्मुख होता है, जिसमें स्त्री की भूमिका एक देवी, एक रक्षक और एक सांस्कृतिक वाहक के रूप में उभरती है। उनकी मुद्राएँ स्थिर और आत्मविश्वास से भरी होती हैं, जो उस समय स्त्रियों को सामाजिक संरचना में मिले सम्मान और सांस्कृतिक मूल्य को उजागर करती हैं।
इन दोनों कलाओं में स्त्री की भाव-भंगिमाएँ और प्रस्तुतियाँ उस समय की सामाजिक सोच को भी दर्शाती हैं कि नारी का स्थान केवल घरेलिकता तक सीमित नहीं था, बल्कि वह धार्मिक जीवन, सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता और सामाजिक चेतना का अभिन्न अंग थी। इन कलात्मक रूपों के माध्यम से यह भी

समझा जा सकता है कि समाज ने स्त्री को कैसे देखा, उसके श्रम, सौंदर्य, शक्ति और मातृत्व को किस प्रकार महत्व दिया और किस तरह उसने स्त्री को सांस्कृतिक विमर्श का केंद्रीय पात्र बनाया। इन कलाओं में स्त्री का स्वरूप उस समय की सामाजिक संरचना की जटिलताओं और मूल्यों का सजीव दस्तावेज है, जो आज भी भारतीय कला और इतिहास को एक सांस्कृतिक आत्मा प्रदान करता है।

परिणाम विश्लेषण:

गांधार कला में महिलाओं का चित्रण पश्चिमी प्रभावों के कारण अधिक यथार्थवादी, शारीरिक सौंदर्य पर केंद्रित और नारीत्व की कोमलता को दर्शाने वाला रहा है। यहाँ स्त्रियाँ अधिकतर बोधिसत्व, यक्षिणी या रक्षक रूप में चित्रित हुई हैं, जिनमें भावप्रवणता और प्राकृतिक मुद्राएँ प्रमुख हैं। यूनानी-रोमन कला की छाप उनके वस्त्र विन्यास, चहरे की भंगिमा और शरीर की संरचना में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इसके विपरीत, मथुरा कला में महिलाओं को भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों और धार्मिक प्रतीकों के साथ चित्रित किया गया है। यहाँ स्त्रियाँ प्रायः यक्षिणियाँ, देवियाँ या भक्ति की प्रतीक रूप में उभरी हैं। मथुरा कला की महिलाएँ अधिक स्थैतिक, प्रतीकात्मक और आंतरिक शक्ति की अभिव्यक्ति करती हैं, जिसमें सौंदर्य के साथ-साथ आध्यात्मिक ऊर्जा का भी समावेश होता है।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि दोनों शैलियों ने महिला चित्रण के माध्यम से न केवल सौंदर्यबोध को अभिव्यक्त किया, बल्कि उन्होंने समाज में महिलाओं की भूमिका, धार्मिक मान्यताओं, तथा सांस्कृतिक मूल्यों को भी मूर्त रूप प्रदान किया। गांधार कला जहां नारी को सांसारिक सौंदर्य के प्रतीक के रूप में दर्शाती है, वहीं मथुरा कला उसे धर्म, शक्ति और मातृत्व की दृष्टि से प्रतिष्ठित करती है। इस तुलनात्मक अध्ययन से यह भी सिद्ध होता है कि भारतीय कला में स्त्री केवल विषय नहीं, बल्कि एक सक्रिय सांस्कृतिक तत्व रही है, जिसने कला और समाज दोनों को दिशा देने का कार्य किया है।

यहाँ **मथुरा और गांधार कला शैली के बीच अंतर** को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए संक्षेप और तुलना तालिका दोनों में प्रस्तुत किया गया है:

मथुरा और गांधार कला शैली में अंतर

विशेषता	मथुरा कला	गांधार कला
भौगोलिक क्षेत्र	उत्तर भारत (मथुरा, उत्तर प्रदेश)	उत्तर-पश्चिम भारत एवं पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान (गांधार)
समयावधि	मुख्य रूप से 1–6 शताब्दी ई.	मुख्य रूप से 1–5 शताब्दी ई.
प्रभाव	स्वदेशी भारतीय परंपरा	ग्रीको-रोमन और भारतीय परंपरा का मिश्रण (ग्रीको-बौद्ध)
सामग्री	लाल बलुआ पत्थर	ग्रे शिस्ट, नीला पत्थर
शैली और रूप	मजबूत, गोल-मटोल और भावपूर्ण आकृतियाँ	यथार्थवादी, प्राकृतिक और शारीरिक अनुपात में सटीक
वस्त्र और पोशाक	पतले और शरीर के अनुरूप वस्त्र	भारी और लहराते वस्त्र, रोमन टोगा जैसी शैली
चेहरे और अभिव्यक्ति	हल्की मुस्कान (मथुरा स्माइल), आध्यात्मिक शांति	ग्रीक शैली के चेहरे, गहरी आँखें, यथार्थवादी भाव-भंगिमा
धार्मिक फोकस	बौद्ध, जैन और हिंदू मूर्तियाँ	मुख्यतः बौद्ध मूर्तियाँ और बोधिसत्त्व
कथात्मक रिलीफ	कम, अधिकतर प्रतीकात्मक	जातक कथाएँ और बुद्ध के जीवन प्रसंगों की विस्तारपूर्वक चित्रण
आध्यात्मिकता	प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक भावना पर जोर	यथार्थवाद और दृश्य सौंदर्य पर अधिक जोर

- **मथुरा कला** पूरी तरह **भारतीय परंपरा** पर आधारित है, जिसमें आध्यात्मिकता, प्रतीकात्मकता और धार्मिक विविधता प्रमुख है।
- **गांधार कला** में **ग्रीको-रोमन यथार्थवाद** और तकनीकी कुशलता का प्रभाव है, जो बौद्ध मूर्तिकला को अधिक यथार्थवादी और प्राकृतिक बनाता है।
- दोनों कला शैलियों ने भारतीय मूर्तिकला और धार्मिक चित्रण पर गहरा प्रभाव डाला, लेकिन **मथुरा ने भारतीय स्वदेशी शैली को**, जबकि **गांधार ने अंतरराष्ट्रीय प्रभावों का मिश्रण** प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष

गांधार और मथुरा कला के विभिन्न चरणों में महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारतीय कला परंपरा में स्त्री का स्वरूप केवल सौंदर्य और सजावट का विषय नहीं रहा, बल्कि वह सामाजिक चेतना, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी बना। इन दोनों शैलियों ने अपने-अपने ऐतिहासिक, भौगोलिक और धार्मिक परिवेश में स्त्री की छवियों को जिस भिन्नता के साथ प्रस्तुत किया, वह न केवल शिल्प दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि उस समय के समाज के स्त्री संबंधी दृष्टिकोण को भी उजागर करती है।

गांधार कला में महिलाओं का चित्रण ग्रीको-रोमन प्रभावों से युक्त यथार्थवादी और सौंदर्यपरक रहा, जहाँ नारी को जीवन के लौकिक पक्ष से जोड़ते हुए दिखाया गया। उनकी आकृतियाँ अधिक कोमल, गहराई से भाव-प्रवण और भौतिक जीवन के समीप प्रतीत होती हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि स्त्री को उस काल में सौंदर्य, आकर्षण और शालीनता की प्रतीक के रूप में देखा जाता था। वहीं मथुरा कला ने स्त्री को अधिक आत्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया। यहाँ नारी केवल एक शारीरिक उपस्थिति नहीं, बल्कि वह शक्ति, मातृत्व और पवित्रता की मूर्त अभिव्यक्ति बनकर उभरती है।

इन दोनों शैलियों में स्त्री की मुद्राएँ, वस्त्र, गहने, मुखाभिव्यक्ति और उनका वातावरण यह दर्शाते हैं कि कला ने नारी को उस समय की सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक धारणाओं के अनुरूप अनेक रूपों में प्रस्तुत किया। यह तुलनात्मक अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि स्त्री की छवि केवल एक कलात्मक या सौंदर्यात्मक रचना नहीं रही, बल्कि वह समाज के भीतर उसकी भूमिका, स्थिति और मूल्य को प्रतिबिंबित करने वाला एक सजीव प्रतीक बनी।

गांधार और मथुरा कला की यह तुलना भारतीय मूर्तिकला के विकासक्रम में नारी विषयक दृष्टिकोणों के परिवर्तन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अध्ययन यह भी प्रमाणित करता है कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियाँ केवल निजी जीवन का हिस्सा नहीं थीं, बल्कि सार्वजनिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की केंद्रीय हस्तियाँ थीं, जिन्हें कला ने विविध रूपों में अमर किया। इस प्रकार इन कलात्मक परंपराओं में महिलाओं की प्रस्तुति एक समृद्ध विरासत है, जो आज भी भारतीय संस्कृति की गहराइयों में जीवंत है।

सन्दर्भ ग्रंथसूचि

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण। *भारतीय कला का इतिहास*। दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 1980।
2. कोमल, के.एन.। *गांधार कला का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन*। वाराणसी: भारतीय विद्या संस्थान, 1995।
3. कृष्ण, देव। *मथुरा स्कल्पचर: ए स्टडी इन आर्ट एंड आइकनोग्राफी*। दिल्ली: इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, 1977।
4. हरले, जे.सी.। *द आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ द इंडियन cy6 कॉन्टिनेंट*। पेंगुइन बुक्स, 1994।
5. आल्चिन, ब्रिजिट एंड रे। *दि बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन*। हार्मोंड्सवर्थ: पेंगुइन, 1968।
6. बाशम, ए.एल.। *दि वंडर दैट वाज इंडिया*। न्यूयॉर्क: ग्रोव प्रेस, 1954।
7. बैनर्जी, आर.डी.। *हिस्ट्री ऑफ इंडियन स्कल्पचर*। कलकत्ता: यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, 1933।
8. सिंघवी, नरेन्द्र। *भारतीय मूर्तिकला में नारी रूप*। जयपुर: राजस्थान संस्कृत अकादमी, 2002।

9. खन्ना, बलवंत। *वुमन इन इंडियन आर्ट*। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 1987।
10. शर्मा, आर.सी.। *गांधार एंड मथुरा: अ स्टडी इन आइकनोग्राफी*। दिल्ली: अभिनव पब्लिकेशन्स, 2001।
11. ढोबले, बी.एल.। *भारतीय मूर्तिकला में सांस्कृतिक मूल्यों का स्वरूप*। नागपुर: कलाशिल्प अकादमी, 1990।
12. मिश्रा, शिवशंकर। *भारतीय प्राचीन कला में स्त्री की भूमिका*। इलाहाबाद: साहित्य भवन, 2005।

IJARIIE